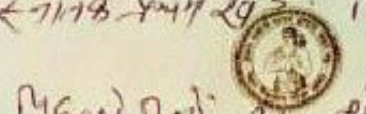

पिछले दिनों का सारांश

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक, हिन्दी विभाग
एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद।

पिछली कक्षा में हमने प्रबंध काव्य ~~के~~ ~~मुक्तक काव्य~~ के सम्बन्ध में जाना। आज हम मुक्तक काव्य के सम्बन्ध में जानकारी लेंगे। जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि मुक्तक काव्य मोती की तरह स्वयं में पूर्ण एवं संक्षिप्त होता है। उसमें पूर्वापर के सम्बन्ध की अपेक्षा नहीं होती। मुक्तक काव्य के अनेक भेद हैं—

(i) गीत - सुख-दुख की भावावेशमयी अवस्था को गिने-चुने शब्दों में स्वर साधना के अनुरूप चित्रित कर देना गीत है।

इस परिभाषा से स्पष्ट है कि गीत में भावावेशमयी अवस्था का चित्रण होता है साथही संक्षिप्तता होती है तथा गेयता अर्थात् गाने योग्य - स्वरसाधना के अनुकूल होता। विद्यापति ने अनेक गीतों की रचना की है जो आजभी मिथिलांचल में प्रचलित एवं लोकप्रिय है।

(ii) सूक्तियां - जीवनोपयोगी एवं समाजोपयोगी तथ्यों एवं सत्यों की अत्यंत संक्षिप्त काव्यात्मक अभिव्यक्ति सूक्तियां कहलाती हैं। सूक्ति का अर्थ है सुन्दर उक्ति- सु+उक्ति। कोई भी संक्षिप्त काव्यात्मक स्वरूप सूक्ति नहीं हो सकती। उसके लिए जीवनोपयोगी या समाजोपयोगी होना अनिवार्य है। इसे सुभाषित भी कहा जाता है। उदाहरणार्थ-

करत करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात से सिल पर परत निसान॥

इसमें निरंतर अभ्यास की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है।

(iii) क्षणिकाएं - हृदय को चमत्कृत कर देने वाली क्षणिक घटना या स्थितियों को ~~संक्षिप्त~~ संक्षेप में चित्रित कर देने वाली रचना क्षणिकाएं के अंतर्गत आती हैं।

क्षणिकाओं की अनुभूति क्षणिक होती है टिकाऊ नहीं होती। इसमें
की प्रधानता होती है। साथ ही विषय की कोई सीमा नहीं होती।
सच पूछा जाये तो मुक्तक काव्य की सीमा अब
होती है। सूर की पदावली, कबीर के दोहे बिहारी सतसई जैसी
मुक्तक काव्य के ही अन्तर्गत आती है। थोड़ा आगे बढ़कर कहें तो
प्रबंधकाव्य के अतिरिक्त जितने भी काव्य रूप हैं सब मुक्तक…

पिछले वर्षों में हमने काव्य या कविता की
विभिन्न विधाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। आज हम
गद्य साहित्य के विभिन्न रूपों या विधाओं पर प्रकाश डा…
का प्रयास करेंगे।

उपन्यास- उपन्यास गद्य की एक नवीन विधा है।
अंग्रेजों के आगमन के साथ उनका साहित्य भी आया जिसमें एक नॉवेल
नाम की विधा थी जो हिन्दी में उपन्यास के रूप में स्वीकृत हुई।
उपन्यास में मानव जीवन को सम्पूर्णता में चित्रित करने का प्रयास
किया जाता है। प्रेमचन्द की परिभाषा उल्लेखनीय है- "उपन्यास
मैं मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर
प्रकाश डालना इसका प्रधान कार्य है।" उपन्यास का गद्य साहि
में वही स्थान है जो महाकाव्य का काव्यसाहित्य में स्थान है।
अर्थात् उपन्यास में नायक के सम्पूर्ण जीवन को चित्रित किया
जाता है। इसका फलक बड़ा ~~[illegible]~~ विशाल होता है। इसमें समाज
विभिन्न परम्पराओं, जीवन शैलियों तथा विभिन्न रूपों का सामंजस्य
पूर्ण अंकन होता है। इसमें एक ही साथ अनेक कथाएं चल सक
हैं किन्तु उनसबका पर्यवसान मूलकथा में ही होता है।

कहानी :- कहानी भारतीयों के लिए कोई नई विधा
नहीं है किन्तु यह कहानी मूलतः आधुनिक कहानी है जिसका